

भारत सरकार
आयुष मंत्रालय
लोक सभा
अतारांकित प्रश्न सं. 2212

12 दिसम्बर, 2025 को पूछे जाने वाले प्रश्न का उत्तर

आयुष में राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन

2212. श्री निलेश ज्ञानदेव लंके:

क्या आयुष मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

- (क) क्या सरकार राष्ट्रीय एक स्वास्थ्य मिशन से संबंधित पहलों में सक्रिय रूप से भाग ले रही है और यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है;
- (ख) सरकार द्वारा उक्त मिशन के अंतर्गत महाराष्ट्र में क्या विशिष्ट योगदान किया गया है या क्या कार्यक्रम आरम्भ किए गए हैं;
- (ग) क्या सरकार ने इस मिशन के अंतर्गत की जाने वाली पहलों के कार्यान्वयन में भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद (आईसीएमआर), राष्ट्रीय रोग नियंत्रण केंद्र (एनसीडीसी) और राज्य स्वास्थ्य विभागों जैसे हितधारकों के साथ कोई सहयोग किया है;
- (घ) यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है; और
- (ङ) सरकार द्वारा देश में मानव-पशु-पारिस्थितिकी इंटरफेस पर स्वास्थ्य संबंधी चुनौतियों के समाधान के लिए अन्य क्या कदम उठाए गए हैं?

उत्तर

आयुष मंत्रालय के राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार)
(श्री प्रतापराव जाधव)

(क): जी हां, भारत सरकार राष्ट्रीय एक स्वास्थ्य मिशन (एनओएचएम) में सक्रिय रूप से भाग ले रही है। इस मिशन की स्थापना फरवरी 2024 में मंत्रिमंडल की मंजूरी के साथ 21वीं प्रधान मंत्री विज्ञान, प्रौद्योगिकी और नवाचार सलाहकार परिषद (पीएम-एसटीआईएसी) की सिफारिश पर की गई थी। मिशन को भारत सरकार के प्रधान वैज्ञानिक सलाहकार के कार्यालय द्वारा संचालित किया जा रहा है और इसमें आयुष मंत्रालय सहित 16 से अधिक केंद्रीय मंत्रालय/विभाग शामिल हैं। स्वास्थ्य अनुसंधान विभाग (डीएचआर)/भारतीय चिकित्सा अनुसंधान परिषद (आईसीएमआर), कार्यान्वयन एजेंसी के रूप में कार्य करते हैं। और अधिक विवरण <https://www.psa.gov.in/oneHealthMission> पर प्राप्त किए जा सकते हैं।

(ख): आईसीएमआर के इनपुट के अनुसार, राष्ट्रीय एक स्वास्थ्य मिशन के तहत, महाराष्ट्र के विभिन्न संस्थानों और स्थलों में कई अध्ययनों को वित्त पोषित किया गया है, जो राज्य में अनुसंधान, निगरानी और क्षमता निर्माण संबंधी प्रयासों का समर्थन करते हैं। कुछ प्रमुख पहलें निम्नलिखित हैं:

1. एक स्वास्थ्य कार्यान्वयन के लिए संस्थागत संरचनाओं और शासन का निर्माण: देश भर में निगरानी, अनुसंधान और प्रकोप प्रतिक्रिया के समन्वय के लिए समर्पित राष्ट्रीय स्तर के संस्थान (राष्ट्रीय एक स्वास्थ्य संस्थान, नागपुर) की स्थापना।
2. उच्च-संरोधन प्रयोगशाला नेटवर्क (बीएसएल-3/बीएसएल-4 प्रयोगशालाओं) की स्थापना: महाराष्ट्र में स्थित संस्थान, राष्ट्रीय बीएसएल-3 और बीएसएल-4 प्रयोगशाला नेटवर्क का

हिस्सा हैं, जो उच्च-संरोधन निदान और उन्नत रोगाणुओं का पता लगाने में योगदान देता है।

3. अभयारण्यों और आर्द्रभूमि में पक्षी-मानव इंटरफेस निगरानी: उच्च जोखिम वाले एवियन रोगाणुओं का शीघ्र पता लगाने में सक्षम बनाने के लिए महाराष्ट्र सहित राज्यों में चयनित पक्षी अभयारण्यों और आर्द्रभूमि में एक प्रमुख अध्ययन (2025) कार्यान्वित किया गया है।

(ग) और (घ): जी हां, सरकार ने राष्ट्रीय एक स्वास्थ्य मिशन के तहत पहलों को कार्यान्वित करने के लिए, भारतीय चिकित्सा अनुसंधान परिषद (आईसीएमआर), राष्ट्रीय रोग नियंत्रण केंद्र (एनसीडीसी), राज्य स्वास्थ्य विभाग, पशुपालन और डेयरी विभाग और अन्य प्रासंगिक संस्थानों सहित प्रमुख हितधारकों के साथ सहयोग स्थापित किया है। और अधिक विवरण <https://www.psa.gov.in/oneHealthMission> पर उपलब्ध है।

(ङ): आईसीएमआर से प्राप्त सूचना के अनुसार, राष्ट्रीय एक स्वास्थ्य मिशन के तहत गतिविधियों के अलावा, सरकार ने देश में मानव-पशु-पारिस्थितिकी इंटरफेस में स्वास्थ्य चुनौतियों का समाधान करने के लिए कई कदम उठाए हैं, जो निम्नलिखित हैं:

1. उभरते प्राणी-जनित और वेक्टर-जनित रोगों की निगरानी के लिए एकीकृत रोग निगरानी कार्यक्रम (आईडीएसपी)/एकीकृत स्वास्थ्य सूचना मंच (आईएचआईपी) के तहत निगरानी को मजबूत करना।
2. मानव, पशु और पर्यावरणीय क्षेत्रों में रोगाणुरोधी प्रतिरोध (एएमआर) निगरानी नेटवर्क का विस्तार।
3. आयुष मंत्रालय जहां उपयुक्त हो, तर्कसंगत, नॉन-एंटीबायोटिक उपचार विकल्पों को बढ़ावा देता है, अप्रत्यक्ष रूप से एएमआर कटौती- एक प्रमुख एक स्वास्थ्य प्राथमिकता का समर्थन करता है। आयुष अनुसंधान परिषदों ने एएमआर, रोग प्रतिरक्षण और वेक्टर जनित रोगों से संबंधित अनुसंधान अध्ययन किए हैं।
4. इसके अलावा, आयुष वर्टिकल, डीजीएचएस ने राज्यों और संघ राज्य क्षेत्रों में प्रसार के लिए एनसीडीसी के सहयोग से मंकीपॉक्स और हीट वेव पर जन-स्वास्थ्य परामर्श जारी किया है।
5. रोगाणुओं के स्पिलओवर का पता लगाने के लिए वन्यजीव गलियारों, अभयारण्यों और पारिस्थितिक रूप से संवेदनशील क्षेत्रों में निगरानी करना।
6. प्रकोप की जांच, जैव सुरक्षा, निदान और एक स्वास्थ्य दृष्टिकोण में मानव स्वास्थ्य, पशु चिकित्सा, वन्यजीव और पर्यावरण अधिकारियों को प्रशिक्षित करना।
7. उच्च जोखिम वाले रोगाणुरोधी रोगों के लिए टीकों, निदान और चिकित्सा विज्ञान के अनुसंधान और विकास में तेजी लाना। उदाहरण के लिए, वर्तमान में क्यासानूर वन रोग (केएफडी) के लिए टीके और निपा वायरस के लिए मोनोक्लोनल एंटीबॉडी विकसित किए जाने की प्रक्रिया में हैं।
8. उन्नत रोगजनक का पता लगाने और प्रकोप प्रतिक्रिया के लिए बीएसएल-3 और बीएसएल-4 प्रयोगशालाओं का विस्तार।
9. वास्तविक समय के डेटा संग्रह, निगरानी और निर्णय लेने के लिए आईएचआईपी, राष्ट्रीय डिजिटल पशुधन मिशन और भारत पशुधन ऐप जैसे प्लेटफार्मों को कार्यान्वित करना।
10. रोगाणुरोधी जोखिमों और सुरक्षित पशु-देखभाल प्रथाओं पर सामुदायिक जागरूकता बढ़ाना।
